भगत त्रिलोचन - सबद ४

नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥

रागु धनासरी, भगत त्रिलोचन, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९५

नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥
दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥
संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥
कुल जन मधे मिल्यो सारग पान रे ॥
करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥
बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥
करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥
अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥
करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥
अमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥
करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥
दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥
करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥
पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥
बदति त्रिलोचन राम जी ॥६॥१॥

सार: भीतर की ओर ठहरकर देखने पर, गहन सत्य प्रकट होता है कि मन अकसर अपने बोझ के लिए अनदेखी चीज़ों, किस्मत, समाज या हालात को दोष देता है जबकि अपने ही कर्मों के गहरे असर को अनदेखा कर देता है। यह बताता है कि हमारे विचारों, इच्छाओं, डर और कामों की छाप हमारे जीवन पर पड़ती है। यह छापें बाहरी लेबल या रीति-रिवाजों से आसानी से नहीं मिटतीं। जबकि, आत्म-चिंतन, सोच-विचार और आंतरिक संतुलन बनाकर हम पुरानी सोच और आदतों के असर से बाहर निकल सकते हैं और उनकी पकड़ को ढीला कर सकते हैं। इन प्रवृत्तियों से भागने के

बजाय, हम गहरी सोच-समझ और जागरूकता विकसित करके उन्हें धीरे-धीरे समाप्त कर सकते हैं। जीवन परिवर्तन के लिए इस यात्रा को अपनाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥
हमारे चारों ओर उपस्थित उस सर्वव्यापी सत्ता का विरोध करके अज्ञानता में क्यों भटकते हो। यह व्यवहार उस मन को दर्शाता है जो अपनी गहन और अधिक समझदार चेतना से अलग हो चुका है।

दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥
बुरे हों या अच्छे, कर्म आपके अपने ही हैं। यह उस समझ को उजागर करती है कि तरह-तरह के कर्म, प्रतिक्रियाएँ और उनके परिणाम इंसान की अपनी आंतरिक प्रवृत्तियों के ही होते हैं। (१)(विराम)

संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥
माथे पर भगवान शिव का प्रतीक चिह्न और पवित्र नदी में स्नान करना। यह रिवाज उस सोच को दर्शाता है जिसमें दार्शनिक ज्ञान होने के बाद भी मन-शुद्धि के लिए, केवल कर्मकांडों को ही महत्त्व दिया जाता है।

कुल जन मधे मिल्यो सारग पान रे ॥
किसी प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेना या वहाँ होना और दार्शनिक ज्ञान प्राप्त करना। यह उस समाज के अन्याय को उजागर करता है जो विरासत में मिले धार्मिक और सामाजिक ऊँच-नीच के भेदभाव को बनाए रखता है और असमानता को बढ़ावा देता है।

करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥
कर्मों के कलंक बने रहते हैं और उन्हें ऊपरी तौर पर धोया नहीं जा सकता। इससे पता चलता है कि आंतरिक उथल-पुथल बनी रहती है, भले ही बाहरी रूप-रंग शुद्ध क्यों न दिखे। (१)

बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥
हे सारथी, प्रकाश का स्रोत तुम्हारा स्वामी है और पक्षियों का राजा तुम्हारा भाई है। पौराणिक कथा का यह संदर्भ दिखाता है कि ज्ञान और प्रभाव तक पहुँच होने के बावजूद, धैर्य की कमी होने पर बाधाएं बनी रह सकती हैं।

करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥
जबकि, अपने कर्मों के कारण, पौराणिक सारथी अरुण का शारीरिक विकलांगता के साथ ही जन्म हुआ था। यह जीवन के विकास में धैर्य को मुख्य गुण के रूप में रेखांकित करता है जो लोग इसे पहचानते हैं, वह अपनी कमियों के बावजूद ब्रह्मांड में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं। (२)

अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥
सर्वव्यापी जागरूकता अनगिनत बाधाओं को दूर करती है। तीर्थस्थलों की यात्रा करने से उनको पार नहीं किया जा सकता। यह प्रतीक है कि आत्मज्ञान कर्मकांडों के बजाय विवेकपूर्ण ज्ञान से प्राप्त होता है।

करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥
कर्म के कारण, खोपड़ी जो अनसुलझे परिणामों का प्रतीक है, उसे मिटाया नहीं जा सकता। पौराणिक कथा का यह संदर्भ प्रकाश डालता है कि जब तक हमारे कर्मों को आंतरिक रूप से समझा, बदला और आत्मसात नहीं किया जाता तब तक वह बोझ की तरह जुड़े रहते हैं। (३)

अमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥
अमृत, अमरत्व का प्रतीक, ससिआ, शांति के चंद्रमा का, धेन, प्रचुरता प्रदान करने वाली गाय का, लच्छीमी, समृद्धि की देवी, कल्पतरु, इच्छा पूरी करने वाला वृक्ष, शिखर, श्रेष्ठ घोडा, सुनागर, ज्ञानी चिकित्सक और पोषण देने वाली नदियाँ। यह सभी, सर्वव्यापी ऊर्जा से उत्पन्न होती हैं। यह चित्रण दर्शाता है कि जो अनेक ख़ज़ाने प्रतीत होते हैं, वह सब एक ही स्रोत की अभिव्यक्तियाँ हैं।

करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥
जब हमारे कर्म कठोर होते हैं तब उनके परिणाम नमक की तरह मिटाए या छिपाए नहीं जा सकते। यह दर्शाता है कि हमारे चुनावों और उनके परिणामों की ज़िम्मेदारी से बचा नहीं जा सकता। (४)

दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥
लंका का किला ढहा दिया गया और एक जीवन-रक्षक जड़ी-बूटी पाने के लिए बग़ीचे को उखाड़ दिया गया। रामायण का यह दृश्य जो हनुमान की अद्भुत शक्ति का वर्णन कर, इस सत्य को रेखांकित करता है कि चाहे कोई कितना ही साधारण या शक्तिशाली हो, प्रत्येक को अपने कर्मों के परिणामों का सामना करना पड़ता है।

करम करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥
कर्म के कारण, लंगोट भी हटाया नहीं जा सका। यह हमारे कर्मों से बनी स्थायी पहचान को दिखाता है जो हमारी बड़ी उपलब्धियों के बावजूद हमारे साथ ही बनी रहती है। (५)

पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥
पूर्व कर्मों का प्रभाव केवल इच्छा करने से, ऐसे ही ग़ायब नहीं हो जाता। दुनियादारी का मोह उसे और मज़बूत करता है, सिर्फ़ आत्म-चिंतन ही उसे समाप्त कर सकता है। यह बताता है कि जागरूकता से विनाशकारी प्रवृत्तियों से बंधे रहने की आदत बदली जा सकती है।

बदति त्रिलोचन राम जी ॥६॥१॥
त्रिलोचन कहते हैं कि वह जागरूकता के उस स्रोत पर चिंतन करते हैं जो हर जगह उपस्थित है। यह सिर्फ़ सिद्धांतों के ज्ञान की अपेक्षा में अनुभव से मिली समझ के महत्त्व को रेखांकित करता है। (६)(१)

तत्त्व: भक्त त्रिलोचन पौराणिक पात्रों का प्रयोग केवल आराधना के विषय के रूप में नहीं बल्कि इंसानी मन की स्थिति को दिखाने वाले आईने के तौर पर करते हैं। वह बताते हैं कि कैसे हमारे काम ज़िंदगी भर हमें बिगाड़ते और बेहतर बनाते हैं। पवित्र स्नान और महान उपलब्धियां हमारे मन के उन अनछुए पहलुओं को साफ़ नहीं कर सकतीं जिन पर हमने ध्यान नहीं दिया है। वास्तविक परिवर्तन तभी आता है जब हम अपने अंदर झाँकते हैं और उस शक्ति को अपनाते हैं जो हमें गहरी समझ और सार्थक बदलाव की ओर ले जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com